ही नहीं चाहते थे। वह चीन की दुर्दशा के लिये बहुत चिन्तित थे। चीन को दुर्दशा से बचाने के लिये वह क्रान्ति के उपासक बन गये थे।

डा० सेन ने अपनी डाक्टरी के साथ-साथ मकाओ में कुछ लोगों का संगठन बनाना शुरू किया, जिससे चीन को एक ओर विदेशी प्रभाव से, दूसरी ओर कुटिल तथा शोषक मंचू राजवंश से मुक्ति दिलाई जा सके। वह चीन में गणतंत्र स्थापित करने के पक्ष में थे। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने एक 'सुधारवादी समाज' (Reformist Society) की स्थापना की थी, जिसके सदस्य अधिकांशतः प्रोटेस्टेन्ट मिशन के स्कूलों में शिक्षा ग्रहण किये हुये थे।

कैन्टन में डा० सेन की डाक्टरी खूब चल गई थी, इसलिये प्रतिस्पर्धावश पुर्तगाली डाक्टरों ने उनको कैन्टन छोड़ने को बाध्य किया। तब उन्होंने पीकिंग आकर वहाँ कृषि संबंधी स्कूल खोलने के लिये एक आवेदन पत्र दिया। पर इस ओर मंचू सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया था। इससे डा० सनयात को मंचू सरकार से चिढ़ हो गयी थी।

वस्तुतः इसी समय से डा० सेन का राजनीतिक जीवन प्रारम्भ हुआ था। वह गुप्त क्रान्तिकारी संस्थाओं के गठन के लिये सक्रिय हो गये। मंचू नरेश को इसका पता चला तो उनके साथियों को कैद कर लिया गया। कुछ साथी देश छोड़ कर भाग गये। खुद डा० सेन भी 1895 ई० में भागकर हांगकांग पहुँचे। वहाँ से वे जापान चले गये।

अब डा० सेन विदेशों में खानाबदोशी जीवन व्यतीत कर संगठन बनाने लगे। उनका अब सोचना था मंचू सरकार को समाप्त कर चीन में रिपब्लिक की स्थापना करना। इसी कारण उन्होंने 1901 की बॉक्सर क्रान्ति में भी भाग लिया था। 1905 में उन्होंने जापान तथा यूरोप में चीनी क्रान्तिकारी संघ की स्थापना की थी। मंचू सरकार के आरोप पर उन्हें लन्दन में कैद कर लिया गया।